कहा जा सकता है

5. हिंदी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ

हिंदी की 5 उपभाषाएँ और 17 बोलियाँ हैं। भोलानाथ तिवारी 'ताज्जुबेकी' और 'निमाड़ी' इन दो बोलियों को पश्चिमी-हिंदी में समाहित कर हिंदी की 19 बोलियाँ मानते हैं। ग्रियर्सन ने हिंदी की 2 उपभाषाओं (पश्चिमी हिंदी और पूर्वी हिंदी) एवं इसके अंतर्गत 8 बोलियों का उल्लेख किया था और सदियों तक भाषा-इतिहास में ग्रियर्सन की इस मान्यता को स्वीकार भी किया जाता रहा था किन्तु सर्वमान्य मतों के अनुसार हिंदी-भाषा के अंतर्गत 5 उपभाषाओं एवं 17 बोलियों को ही स्थान मिला है। एक दृष्टि में, इन्हें इस प्रकार देखा जा सकता है—

उपभाषाएँ	बोलियाँ
1. पूर्वी हिंदी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
2. पश्चिमी हिंदी	कौरवी, (खड़ी बोली), ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, हरियाणी
3. पहाड़ी	पश्चिमी पहाड़ी, मध्यवर्ती पहाड़ी (कुमाऊनी, गढ़वाली)
4. राजस्थानी पश्चिमी	राजस्थानी, (मारवाड़ी), पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी), उत्तरी राजस्थानी (मेवाती), दक्षिणी राजस्थानी (मालवी)
5. बिहारी	मगही, मैथिली, भोजपुरी।

1. पूर्वी हिंदी की 3 बोलियाँ हैं—अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।

1. अवधी—पूर्वी हिंदी-बोलियों में 'अवधी' सर्वप्रमुख बोली है। कोसली, पूरबी इसके अन्य नाम हैं किन्तु अवधी नाम ही सर्वाधिक प्रचलित एवं मान्य है। अवधी बोली 'अर्द्धमागधी' अपभ्रंश से विकसित है।

क्षेत्र—अवधी बोली का केन्द्र अयोध्या है। अयोध्या का ही विकसित रूप अवध है, जिससे 'अवधी' बना है। यह लखनऊ, इलाहाबाद, फतेहपुर, मिर्जापुर, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, फैजाबाद, प्रतापगढ़, गोंडा, बाराबांकी, बहाराइच इत्यादि क्षेत्रों में बोली जाती है।

साहित्य—अवधी में साहित्य एवं लोकसाहित्य पर्याप्त हैं। इसके प्रथम कवि मुल्ला दाऊद (चंदायन) हैं। तुलसी (रामचरितमानस), जायसी (पद्मावत), कुतुबन (मृगावती) इत्यादि अवधी के मुख्य कवि हैं। समस्त सूफी काव्य अवधी भाषा में ही रचित हैं। श्यामसुन्दर दास अवधी बोलने वालों की संख्या 2 करोड़ बताते हैं।

Scanned by TapScanner

विशेषताएँ—

1. संज्ञा के 3 रूप मिलते हैं—बेटा, बेटवा, बेटौना।
2. बहुवचन खड़ी बोली की तरह अवधी में मिलते हैं। यथा—लड़का से लड़के, घोड़ा से घोड़े।
3. स्वार्थे प्रत्यय 'वा' का व्यापक प्रयोग मिलता है। यथा—मोरवा, घोरवा।
4. 'महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति' अवधि की एक मुख्य विशेषता है। जैसे—इलाका-इलाखा, दौड़-धौड़, पेड़-फेड़।
5. 'व' का 'ब' प्रयोग। जैसे—बिद्यालय, बिद्यार्थी, बिवेक, बिकास, बाहन आदि।
6. 'ण' के स्थान पर 'न' का प्रयोग। कोण-कोन, फोन-फोण।
7. अवधी में 'अ' अर्धसंवृत है।
8. ऐ, औ का अई, अउ प्रयोग। जैसे—कइसे, जइसे,।
9. अवधी में श/ष का उच्चारण 'स' का है। जैसे—रिसि, विस्वामित्र, संकर, सासन (ऋषि, विश्वामित्र, संकर, शासन) आदि।
10. परसर्ग की दृष्टि से खड़ी बोली का 'ने' पूर्वी हिंदी में नहीं है।
11. गिनती की दृष्टि से अवधी के निम्नांकित शब्द उल्लेखनीय हैं, जो हिंदी से भिन्न हैं—दुई, तीनि, छा, एगारा, एग्यारा, पहिल, दोसर, तिसरे इत्यादि।

नमूना—हरदेव बाहरी ने अवधी का नमूना इस प्रकार दिया है—

एक मनई के दुइ बेटवा रहिन। ...ओई जून ओकर जेठ बेटवा खेत माँ रहा। ... हम उठके अपने बाप के लग जाइथै अउर उससे कहब।[45]

2. **बघेली**—पूर्वी हिंदी की दूसरी मुख्य बोली बघेली है। बघेली का विकास 'अर्द्धमागधी अपभ्रंश' से हुआ है।

क्षेत्र—बघेलखंड की बोली 'बघेली' या 'बघेलखंडी' है। इसका क्षेत्र मुख्य रूप से रीवा नागौद, शहडोल, सतना, मैहर तथा आसपास का क्षेत्र है। **उदयनारायण** तिवारी के अनुसार—"बघेली के उत्तर में इलाहाबाद की अवधी तथा मिर्जापुर की पश्चिमी भोजपुरी बोली जाती है। इसके पूर्व में छोटानागपुर तथा मिर्जापुर की छत्तीसगढ़ी का क्षेत्र तथा दक्षिण में बालाघाट की मराठी तथा दक्षिण-पश्चिम में बुंदेलखंडी का क्षेत्र है।[46]

साहित्य—बघेली में ललित साहित्य का प्रायः अभाव है। थोड़े से दानपत्र, दो चार धार्मिक ग्रंथ, लोकगीतों और कुछ कथाओं के संग्रह इसमें प्राप्त होते हैं। बघेली बोलनेवालों की संख्या लगभग 60 लाख है।[47]

विशेषताएँ—

1. सर्वनामों में मुझे के स्थान पर म्वां, मोही; तुझे के स्थान पर त्वां, तोही; वहि (उसको), यहि (इसको) इत्यादि मिलते हैं।

Scanned by TapScanner

2. परसर्ग में कर्म-संप्रदान में क, का, के अतिरिक्त कहा का प्रयोग होता है।
3. करण-अपादान में 'ते' के अतिरिक्त 'तार' उल्लेखनीय है। जैसे—अधिकहा, नीकहा इत्यादि।
4. विशेषण-निर्माण में 'हा' प्रत्यय का प्रयोग होता है।
5. भूतकालित अवधि रहा, रहेन के अतिरिक्त बुंदेली के ता, तें का भी प्रयोग मिलता है।
6. बघेली में भविष्यत काल में 'हू' रूप की प्रधानता है। जैसे—जइहौं, कहिहौं, खइहौं, लिखिहौं।

नमूना—"एक मनई के दुइ लरिका रहै। .... तब वोकर जेठ लरिका खेत मा रहा तै। ... मैं उठि कै अपने बाप के लघे जात हौं और वो से कहिहौं।"[48]

3. छत्तीसगढ़ी—पूर्वी हिंदी की बोलियों में छत्तीसगढ़ी तीसरी प्रमुख बोली है। अर्द्धमागधी अपभ्रंश से छत्तीसगढ़ी बोली विकसित है। 'लारिया' और 'खल्ताही' इसके अन्य 2 प्रचलित नाम हैं।

क्षेत्र—मुख्य क्षेत्र छत्तीसगढ़ी होने के कारण इसका नाम 'छत्तीसगढ़ी' पड़ा है। इसका क्षेत्र रायगढ़, सारंगढ़, खैरागढ़, रायपुर, दुर्ग, सरगुजा, काँकेर, कोरिया इत्यादि मुख्य रूप से है।

साहित्य—छत्तीसगढ़ी में केवल लोकसाहित्य मिलता है। उदयनारायण तिवारी अवधी बघेली और छत्तीसगढ़ी में अंतर बहुत कम मानते हैं।[49] श्यामसुंदर दास छत्तीसगढ़ी बोलने वालों की संख्या 70 लाख के आसपास बताते हैं।[50]

विशेषताएँ-

1. 'महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति' छत्तीसगढ़ी बोली की मुख्य विशेषता है। यथा—कछेरी (कचहरी), झन (जन), इलाखा (इलाका) इत्यादि।
2. अघोषीकरण की विशेषता छत्तीसगढ़ी की एक अन्य मुख्य विशेषता है। जैसे—बंदगी-बंदकी, शराब-शराप, खराब-खराप इत्यादि।
3. छत्तीसगढ़ी में 'स' का 'छ' एवं 'छ' का 'स' उच्चारण होता है। जैसे—सड़क-छड़क, सर्फ-छर्फ, छेना-सेना, छेद-सेद, छमछम-समसम इत्यादि।
4. प्रायः 'मन' या 'मनन' जोड़कर छत्तीसगढ़ी में बहुवचन का निर्माण होता है। जैसे—हम मन (हम लोग), उनमन (उनलोग)
5. संज्ञा-सर्वनामों में कर्म संप्रदान में 'ला' और करण अपादान में 'ले' छत्तीसगढ़ी के विशिष्ट परसर्ग हैं।

नमूना—एकठन मनखे के दुई बेटवा रहिन। तवो वोकर बड़का बेटवा खेत मां रहिस। मैं उठके अपना ददा मेर जात औं और वो ला गोठियाहौं....।[51]

Scanned by TapScanner

2. पश्चिमी हिंदी—

पश्चिमी हिंदी की 5 बोलियाँ हैं—खड़ी बोली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुन्देली और हरियाणी (बांगरू)।

1. कौरवी (खड़ी बोली)—पश्चिमी हिंदी-बोलियों में खड़ी बोली एक प्रमुख बोली है। यह शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित है।

क्षेत्र—मेरठ, सहारनपुर, रामपुर, मुजफ्फरपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, अंबाला, देहरादून खड़ी बोली के मुख्य क्षेत्र हैं।

नामकरण—'खड़ी बोली' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है—साहित्यिक हिंदी एवं खड़ी बोली के अर्थ में और दूसरा दिल्ली-मेरठ के आसपास की लोक बोली के अर्थ में। यहाँ खड़ी बोली का अभिप्राय दूसरे अर्थ से है। खड़ी बोली में 'खड़ी' का अर्थ विवादास्पद है। कुछ विद्वानों ने इसका अभिप्राय शुद्ध (Pure) माना, कुछ ने खड़ी (Standing) माना और कुछ विद्वानों ने इसका संबंध खड़ी बोली में अधिकता से प्रयुक्त खड़ी पाई (सोया, खाया) से जोड़ा है। ग्रियर्सन ने अपने भाषा-सर्वेक्षण में इसे हिन्दोस्तानी[52] धीरेन्द्र वर्मा ने इसे 'खड़ी बोली' और भोलानाथ तिवारी ने इसे 'कौरवी' कहा है।

साहित्य—खड़ी बोली साहित्य एवं लोकसाहित्य की दृष्टि से काफी सम्पन्न है। पवाड़ा, लोकगीत लोककथा, नाटक पर्याप्त मात्रा में इसमें मिलते हैं।

विशेषताएँ—

1. खड़ी बोली आकारान्त प्रधान है। जैसे—करना, करता, किया घोड़ा, छोटा इत्यादि।
2. दीर्घ स्वर के बाद मूल व्यंजन के स्थान पर द्वित्व व्यंजन खड़ी बोली की मुख्य विशेषता है। जैसे—बाप्पू, रोट्टी इत्यादि।
3. महाप्राण के पूर्व इसी स्थिति में अल्पप्राण का आगम इसकी अन्य विशेषता है।
4. 'न' का 'ण' प्रयोग। जैसे—सोना-सोणा, खाना-खाणा।
5. 'ल' का 'ळ' प्रयोग। जैसे—काला-काळा, पीला-पीळा, केला-केळा।
6. ए, औ का उच्चारण इतना संवृत होता है कि क्रमशः ऐ/ओ सुनाई देते हैं। जैसे पैर के लिए पेर, बैठ के लिए बेठ, दौरा के लिए दोरा इत्यादि।
7. ठेठ खड़ी बोली में /ड़/ के स्थान पर /ड/ का प्रयोग मिलता है। जैसे—पेड़-पेड, पहाड़-पहाड।
8. खड़ी बोली के कुछ मुख्य क्रिया-विशेषण हैं—कै (कितने), अस (ऐसे), वस (जैसे), कीकर (कैसे), क्यूँ (क्यों) इत्यादि।
9. खड़ी बोली में पूर्वकालिक क्रिया में 'कर' की अपेक्षा 'के' का प्रयोग अधिक व्यापक है। जैसे—सुन के, उठ के, पढ़ के, जा के, खा के, इत्यादि।

Scanned by TapScanner

10. खड़ी बोली में आज्ञार्थ में सुन, सुनो, सुनिए, सुनियो का प्रयोग होता है।

नमूना—एक आदमी के दो लोण्डे थे। ...तब बड़ा भाई जंगल में था। ...मैं अब उठके अपने बाप के धोरे जाऊँ और उससे कहूँगा।[53]

2. **ब्रजभाषा**—'पश्चिमी हिंदी-बोलियों में 'ब्रजभाषा' मुख्य बोली है। ब्रजभाषा शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित है।

क्षेत्र—सम्पूर्ण ब्रजमण्डल की बोली 'ब्रजभाषा' है। विशुद्ध ब्रजभाषा मथुरा, अलीगढ़, आगरा जिलों में बोली जाती है। इसके अतिरिक्त भरतपुर, करौली, ग्वालियर का पश्चिमी भाग, जयपुर का पूर्वी भाग, मुजफ्फरपुर, मैनपुरी, एटा, बदायूँ, बरेली, रामपुर इत्यादि भी इस बोली के क्षेत्र हैं। धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार—"भरतपुर, करौली तथा ग्वालियर के पश्चिमोत्तर भाग में इसमें राजस्थानी और बुंदेली की झलक आने लगती है तथा एटा, मैनपुरी, बरेली के जिलों में कुछ कन्नौजीपन आने लगता है।"[54]

अर्थ एवं नामकरण—ब्रज का पुराना अर्थ 'पशुओं या गौओं का समूह' या 'चारागाह' है। पशुपालन की प्रधानता के कारण यह क्षेत्र 'ब्रज' कहलाया और इसी के आधार पर इसकी बोली 'ब्रजभाषा' अथवा 'ब्रजी' कही जाती है।

साहित्य—साहित्य एवं लोक-साहित्य दोनों ही दृष्टियों से ब्रजभाषा बहुत सम्पन्न है। सूर, तुलसी, नंद, रहीम, रसखान, घनानंद, बिहारी, भूषण देव, रत्नाकर, भारतेन्दु, ब्रजभाषा के मुख्य कवि हैं। श्यामसुंदर दास के अनुसार—"इसके बोलनेवालों की संख्या 1 करोड़ 30 लाख है।"[55]

विशेषताएँ:

1. ब्रजभाषा ओकारान्त प्रधान भाषा है। जैसे—मीठो, तीखो, छोटो, बड़ो इत्यादि।
2. व्यंजनांत के स्थान पर उकारांत (जैसे—चालु, आपु, बागु) ब्रजभाषा की मुख्य विशेषता है।
3. 'ने' के स्थान पर 'नै' का प्रयोग इसमें होता है। जैसे—उसने-उसनै, इन्होंने-इन्होंने।
4. ऐ, ओ, ब्रजभाषा की पहचान की विशेष ध्वनियाँ हैं। जैसे—तो, को, पे, में के स्थान पर तौ, कौ, पै, मैं इत्यादि।
5. ब्रजभाषा में 'ल' और 'ड़' की जगह बहुधा 'र' का प्रयोग होता है। जैसे—झगड़ा-झगरो, पीला-पीरो, काला-कारो इत्यादि।
6. ब्रजभाषा में खड़ी बोली की तरह 'औ' प्रत्यय प्रयुक्त होता है। जैसे—घरौं, बातौं, चरौं, करौं इत्यादि।
7. ब्रजभाषा में कारकों के कुछ विभक्ति-रूप मिलते हैं। जैसे—पूतहिं, बांभनै, सपनैं, हिये, जगति, द्वारै इत्यादि।
8. ब्रजभाषा के संख्यावाची शब्द इसकी एक अन्य मुख्य विशेषता है। यथा—द्वै, तीनि, सोरह, पहिलो, दूजो इत्यादि।

Scanned by TapScanner

9. ब्रजभाषा के कुछ विशिष्ट अव्यय इस प्रकार हैं—इहाँ, हियाँ, उतै, कितै, जिमि (ज्यों), किमि (कैसे), मनौ (मानो), हू (भी) इत्यादि।
10. आज्ञार्थ में सुन, सुनु, सुनाह, सुनौं, सुनियो, सुनियै, सुनिजै इत्यादि खड़ी बोली से बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं।

नमूना—एक जन के दो छोरा हैं। ... तब बाकौ बड़ौ छोरा खेत पे हौ। .... हौं अठकै अपने काका के ढोरे जातूँ और वा से कहूँगौ....।[56]

3. कन्नौजी—पश्चिमी हिंदी-बोलियों में एक बोली 'कन्नौजी' है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।

क्षेत्र—कन्नौज की भाषा 'कन्नौजी' है। श्यामसुन्दर दास के अनुसार—"कन्नौजी का मुख्य केन्द्र फर्रूखाबाद जिले का इतिहास-प्रसिद्ध नगर 'कन्नौज' (कान्यकुब्ज) है। कन्नौज के आधार पर ही इस बोली का नामकरण 'कन्नौजी' हुआ।[57] इटावा, फर्रूखाबाद, शाहजहाँपुर, पीलीभीत, कानपुर, हरदोई का पश्चिमी भाग इसके मुख्य क्षेत्र हैं।

साहित्य—कन्नौजी में कुछ लोक-साहित्य मिलता है। धीरेन्द्र वर्मा ने ब्रजभाषा से साम्यता के कारण इसे ब्रजभाषा का एक उपरूप माना है।[58] श्यामसुन्दर दास के अनुसार कन्नौजी बोलने वालों की संख्या लगभग 45 लाख है।[59]

विशेषताएँ—

1. कन्नौजी उकारांतता प्रधान बोली है। जैसे—सबु, घरू, बापु, कबु, चलु इत्यादि।
2. इसमें ओकारांतता की प्रवृत्ति मिलती है। यथा—छोटो, बड़ो, खायो, पीयो इत्यादि।
3. स्वार्थे प्रत्यय इया का प्रयोग इसकी अन्य विशेषता है। जैसे—छोकरिया, बकरिया।
4. ऐ, औ को संयुक्त स्वर करके अर्थात् अई, अउ उच्चरित किया जाता है। जैसे—कउ, कउन इत्यादि।
5. बहुवचन में हिंदी के 'लोग' के स्थान पर कन्नौजी में 'ह्वार' का प्रयोग मिलता है। जैसे—हमलोग, -हम ह्वार, उनलोग-उनह्वार।
6. कन्नौजी में भविष्यतकाल में हुइहों, चलिहै इत्यादि पूर्वी रूप प्रचलित हैं। यथा—

हमलोग चलेंगे-हमहवार चलिहै।

नमूना-एक जने के दोए लड़का हते। .... तब उसको बड़ो लड़िका खेत में हतो। ... मैं उठके बापु के तीर जात हौं और उनसे कैहों।[60]

4. बुंदेली—बुंदेली या बुंदेलखण्डी पश्चिमी हिंदी-वर्ग की चतुर्थ बोली है। शौरसेनी अपभ्रंश से यह विकसित है।

क्षेत्र—बुंदेलखंड की बोली 'बुंदेली' है। झांसी, ग्वालियर, ओड़छा, सागर, सिवनी, होशंगाबाद तथा आसपास बुंदेली का क्षेत्र है।

साहित्य—बुंदेली में लोकसाहित्य पर्याप्त है। बुंदेली में 'इसुरी के फाग' बड़े

Scanned by TapScanner

प्रसिद्ध हैं। हिंदी का प्रसिद्ध लोकगाथा 'आल्हा' बुंदेली की एक उप बोली बनाफरी में लिखित है। धीरेन्द्र वर्मा ब्रज, कन्नौजी एवं बुंदेली को एक ही उपभाषा के 3 प्रादेशिक रूप मानते हैं।[61] श्यामसुन्दर दास बुंदेली की पवांरी, राठौरी, बनाफरी, कुंडी, भदावरी इत्यादि बारह उपबोलियाँ बताते हैं।[62]

विशेषताएँ—

1. बुंदेली में अन्त्य अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति मिलती है। जैसे—मूक, दूद, जीब।
2. स का 'छ' और च का 'स' प्रयोग इसमें होता है। जैसे—सीढ़ी-छीढ़ी, चीनी-सीनी, चाचा-सासा।
3. भविष्यतकाल में /ह/ग/ और /नैं/ रूपों का प्रयोग होता है। जैसे—होगो, हुहौ, होनैं।
4. बुंदेली में संज्ञार्थक क्रिया के 2 रूप हैं—मारबौ, मारनैं।
5. कुछ मुहावरेदार प्रयोग बुंदेली के दर्शनीय हैं। यथा—वाने बैठो (वह बैठा), ताखों के पीछे (उसके पीछे) इत्यादि।

नमूना—एक जने के दो मोड़ा हते। ... जब वा के बड़ो भइया खेत में हतो। ... मैं उठके अपने बाप के ढिंगा जात हों और वासों केहों ....।[63]

5. हरियाणवी—पश्चिमी हिंदी-बोलियों में 'हरियाणवी' या 'हरियाणी' पाँचवीं बोली है। इसे बांगरू या जाटू भी कहते हैं। श्यामसुन्दर दास लिखते हैं कि—"करनाल के आसपास का क्षेत्र बांगर कहलाता है। इस बोली का मुख्य क्षेत्र बांगर होने के नाते बाँगर कहा गया। इस प्रदेश के निवासी अधिकतर जाट हैं इसलिए उनकी बोली को जाटू भी कहा जाता है।"[64] रामविलास शर्मा बांगरू और खड़ी बोली के उपभाषा वाले रूप को अलग-अलग नाम न देकर एक ही नाम बांगरू से अभिहित करते हैं।[65] शौरसेनी अपभ्रंश से यह विकसित है।

क्षेत्र—पंजाब, दिल्ली, रोहतक, करनाल, पटियाला, हरियाणा इस बोली के मुख्य क्षेत्र हैं। धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार—"यह दिल्ली, करनाल, रोहतक और हिसार जिलों तथा समीपवर्ती पटियाला, नाभा और झींद के गाँवों में बोली जाती है। यह पंजाबी और राजस्थानी मिश्रित खड़ी बोली है।"[66]

साहित्य—इसमें सिर्फ लोक-साहित्य मिलता है।

विशेषताएँ—

1. संज्ञा के रूपों में तिर्यक् रूप बहुवचन आँकारान्त होता है। जैसे—स्कूलां से, घराँ से, चलाँ, रुकाँ, कहाँगा इत्यादि।
2. परसर्गों में ए का 'ऐ' उच्चारण इसकी मुख्य विशेषता है।
3. सहायक-क्रिया है, हैं, हूँ, हो न होकर सै, सैं, सूँ, सो होता है।

Scanned by TapScanner

4. पूर्वकालिक क्रिया में 'कै' और संज्ञार्थक क्रिया मारण, मारणा इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं।
5. एक व्यंजन के स्थान पर द्वित्व व्यंजन (यथा—बाब्बू, गाड्डी, बाप्पू) इसकी अन्य विशेषता है।
6. ल का 'ळ' प्रयोग हरियाणी की एक मुख्य विशेषता है। जैसे—काला-काळा, बाल-बाळ, माला-माळा इत्यादि।
7. ड़ का ड, न का ण प्रयोग हरियाणवी में होता है। यथा—पहाड़-पहाड, घोड़ा-घोडा इत्यादि।

नमूना—एक आदमी कै दो छोरे थे। .... तब उसका बड़ा छोरा खेत में था। ... मैं उठकै अपने बाप्पू धोरे चलाँ अर उसतै कहाँगा।[67]

पूर्वी हिन्दी एवं पश्चिमी हिन्दी में अन्तर

बोलियों की संख्या की दृष्टि से पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत 3 बोलियाँ (अवधी, बघेली एवं छत्तीसगढ़ी) आती हैं जबकि पश्चिमी हिंदी के अन्तर्गत 5 बोलियाँ (खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी, बुंदेली एवं कन्नौजी) परिगणित होती हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्वी हिन्दी अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित है तो पश्चिमी हिन्दी शौरसेनी अपभ्रंश से उद्भूत है।

भौगोलिक दृष्टि से पूर्वी हिन्दी पहाड़ी, बिहारी, उड़िया, बंगला के बीच की है तो पश्चिमी हिन्दी पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती और मराठी के बीच की है।

ध्वनि तात्त्विक दृष्टि से पूर्वी हिन्दी एवं पश्चिमी हिन्दी में प्रमुख अंतर निम्नांकित हैं—

1. पूर्वी हिन्दी में 'ह्रस्व' की प्रधानता है, जबकि पश्चिमी हिन्दी में 'दीर्घ' की। जैसे—छोट, बड़, मोट, पातर (पूर्वी हिन्दी) छोटा, बड़ा, मोटा, पतला (पश्चिमी हिन्दी)।
2. पूर्वी हिन्दी में 'ने' उपसर्ग का प्रयोग नहीं होता है, जबकि पश्चिमी हिन्दी में 'नें' उपसर्ग का बहुत प्रयोग होता है। जैसे—सुनीता कहिस (पूर्वी हिन्दी) सुनीता ने कहा (पश्चिमी हिन्दी)।
3. पूर्वी हिन्दी 'हम' एकवचन के लिए प्रयुक्त होता है, जबकि पश्चिमी हिन्दी में यह बहुवचन के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे—पूर्वी हिन्दी-इस समय हम कक्षा ले रहे हैं। पश्चिमी हिन्दी-हम खायेंगे (अर्थात् हम लोग खायेंगे)।
4. पूर्वी हिन्दी में 'अ' कम विवृत है, जबकि पश्चिमी हिन्दी में ज्यादा है।
5. पूर्वी हिन्दी में अनेक स्थानों में जहाँ 'र' प्रयुक्त होता है, वहीं पश्चिमी हिन्दी में 'ल'। जैसे—केरा-केला, फर-फल, कर-कल, खर-खल।

Scanned by TapScanner

पहाड़ी बोलियाँ

1. पश्चिमी पहाड़ी—हिंदी की 17 बोलियों में 'पश्चिमी पहाड़ी' पहाड़ी बोली-वर्ग की एक मुख्य बोली है। इसका विकास 'खस' नामक अपभ्रंश से विकसित माना जाता है। भोलानाथ तिवारी ने इसे शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से विकसित माना है।

क्षेत्र—जौनसार, सिरमौर, शिमला, मंडी, सेवा तथा आसपास इसके मुख्य क्षेत्र हैं। **गोपाल राय** के अनुसार—"पश्चिमी पहाड़ी लगभग 30 बोलियों का समूह है, जो शिमला के निकटवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है। साहित्यिक, राजनीतिक दृष्टि से इन बोलियों का महत्त्व बहुत कम है। ये बोलियाँ हिमाचल प्रदेश में अवस्थित हैं, जहाँ की साहित्यिक और सरकारी भाषा हिंदी हैं।[66]

2. मध्यवर्ती पहाड़ी—मध्यवर्ती पहाड़ी, पहाड़ी-वर्ग की दूसरी व अन्तिम बोली है। मध्यवर्ती पहाड़ी 'गढ़वाली' और 'कुमाऊनी' दो बोलियों का सामूहिक नाम है। मध्यवर्ती पहाड़ी खस अपभ्रंश से विकसित है।

क्षेत्र—इसके क्षेत्र नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, (कुमाऊनी), गढ़वाल, टिहरी, चमोली (गढ़वाल) इत्यादि हैं। इसमें लोकसाहित्य व साहित्य दोनों मिलते हैं।

विशेषताएँ—

1. गढ़वाली में 'क' वर्गीय ध्वनियाँ कण्ठ और काकल के बीच में बोली जाती हैं। च वर्गीय ध्वनियाँ अधिक संघर्षी हैं। 'ल' दन्ताग्र है। स-श, न-ण, ल-ळ अलग-अलग ध्वनिग्राम हैं। अनुनासिकता की प्रवृत्ति इसकी मुख्य प्रवृत्ति है। यथा—पैंसा, सांत, आंठ इत्यादि।
2. कुमाऊनी पर दरद, खस, राजस्थानी, खड़ी बोली इत्यादि का प्रभाव है। ण, क राजस्थानी से; अल्पप्राणीकारण 'दरद' और 'खड़ी बोली' से; ए, ओ, के स्थान पर या, वा का प्रयोग अवधी से मिलता-जुलता है। में/मैं पश्चिमी हिंदी के समान इसमें मिलते हैं।

गोपाल राय ने मध्यवर्ती पहाड़ी के विषय में लिखा है कि—"ये बोलियाँ 'कुमाऊनी और गढ़वाली' खड़ी बोली के अत्यन्त निकट होने के कारण उससे प्रभावित होकर गौण महत्त्व की हो गयी हैं।"[69] कपिलदेव द्विवेदी, गोपाल राय सरीखे भाषाचिंतक पहाड़ी बोली के अंतर्गत 'पूर्वी पहाड़ी का भी उल्लेख करते हैं। पूर्वी पहाड़ी नेपाल की राजभाषा और साहित्यिक भाषा है। इसे नेपाली, पर्वतीया, गुरखाली तथा खसकुरा भी कहते हैं।[70]

4. राजस्थानी बोलियाँ—

इसके अन्तर्गत 4 बोलियाँ आती हैं—पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी), पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी), दक्षिणी राजस्थानी (मालवी) और उत्तरी राजस्थानी (मेवाती)।

Scanned by TapScanner

1. पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी)—राजस्थानी बोलियों में पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) बोली एक प्रमुख बोली है। शौरसैनी के 'नागर अपभ्रंश' से इस बोली का विकास हुआ है।

क्षेत्र—पश्चिमी राजस्थान अर्थात् जोधपुर, बीकानेर, मेवाड़, सिरोही, जैसलमेर, जयपुर का उत्तरी भाग, पंजाब में हिसार-भिवानी के पूर्व तक इसका क्षेत्र है।

साहित्य—मारवाड़ी में साहित्य एवं लोकसाहित्य दोनों हैं। मीराँ के पद मारवाड़ी में ही रचित हैं। मारवाड़ी 'डिंगल' के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें प्रचुर साहित्य मिलता है।

विशेषताएँ—

1. मारवाड़ी में दो क्लिक ध्वनियाँ हैं—ध़ और स़। ध़ का उच्चारण द-ध के बीच और स़ का उच्चारण स-ह के बीच होता है।
2. मारवाडी में 'स' का उच्चारण कुछ-कुछ 'श के समान होता है। सर्फ-शर्फ, समुद्र-शमुद्र, सड़क-शड़क इत्यादि।
3. मारवाड़ी में विशेषण की तुलनावस्था बताने के लिए 'सूं' के अतिरिक्त करताँ (अपेक्षाकृत) का प्रयोग किया जाता है। जैसे—सोअग करतां मोअन भलेरो है। (सोहन से मोहन भला है।)
4. सर्वनामों में रूप-विविधता मारवाड़ी में अधिक है। जैसे—मैं के लिए हूँ, म्हँ, मूं, म्हैं; यह के लिए ओ, यो इत्यादि।
5. मारवाड़ी के भविष्यतकाल के लिए ग, स, ल, के अतिरिक्त इसमें 'ह' रूप भी प्रयुक्त होता है।
6. सहायक क्रिया 'ह्व' रूप भी मारवाड़ी की मुख्य विशेषता है। जैसे—ह्वां (हम हों), ह्वती (होती) ह्वऊला (हूँगा)।
7. मारवाड़ी में देशज शब्दों की बहुलता है। जैसे—डीकरो (पुत्र), गंडक (कुत्ता), जीमण (भोजन) इत्यादि।

नमूना—एक मिनख रै बे/दोय दिकरा ता/हा ¨ उन बिरियाँ बड़ो दिकरो खेत में तो/हो। ¨ हमें हूँ उठर आपरे बाप कने जाऊ अरे/नै उणने कइस।[71]

2. पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी)—राजस्थानी बोलियों में 'जयपुरी' (पूर्वी राजस्थानी) एक प्रमुख बोली है। इस बोली का विकास शौरसैनी नागर अपभ्रंश से हुआ है।

क्षेत्र—राजस्थान के पूर्वी भाग जयपुर, अजमेर, किशनगढ़ इत्यादि जयपुरी के मुख्य क्षेत्र हैं। इसकी प्रतिनिधि बोली 'जयपुरी' है, जिसका केन्द्र 'जयपुर' है। जयपुरी को 'ढूँढाणी' भी कहते हैं। बूंदी, कोटा, बाराँ, सवाईमाधोपुर में बोली जाने वाली हाड़ौती जयपुरी की उपबोलियों में मुख्य है। ढूँढाणी बोलने वालों की संख्या 36 लाख के लगभग है।[72]

साहित्य—जयपुरी में लोकसाहित्य प्राप्त होता है।

Scanned by TapScanner

विशेषताएँ—

1. कर्म संप्रदान-नै/कै
2. करण अपादान-सूं/सें
3. संबंध-को, का, की
4. अधिकरण-मैं, ऊपर/मालै
5. सर्वनामों में हूँ की अपेक्षा मैं, मनै के अतिरिक्त मूंनै, तनै के अतिरिक्त तूंनै।
6. जयपुरी में एकवचन के रूप में म्हारों, थारों तथा बहुवचन-म्हाँको, थाँको इत्यादि प्रयुक्त होते हैं।
7. जयपुरी के पूर्णकृदन्त-दीनू, लीनू हैं।

नमूना—एक जणो के दो बेटा छा। ˙ ˙ तब ऊँको बड़ो बेटो खेत में छो। ˙ ˙ मैं उँठर म्हार बाप कने जाउँ अरा उननै कहस्यूँ।[73]

3. दक्षिणी राजस्थानी (मालवी)—राजस्थानी बोलियों में 'मालवी' एक मुख्य बोली है। 'मालवी' बोली का विकास राजस्थानी बोलियों के समान ही शौरसेनी के नागर अपभ्रंश से हुआ है। मालवी को 'दक्षिणी राजस्थानी' भी कहते हैं।

क्षेत्र—इंदौर, उज्जैन, देवास, रतलाम, भोपाल, होशंगाबाद, गुना, नीमच, ग्वालियर, झालावाड़, टोंक, चितौड़गढ़ का कुछ भाग इसका क्षेत्र है।

साहित्य—इसमें छिटपुट साहित्य एवं पर्याप्त लोकसाहित्य मिलता है।

विशेषताएँ—

1. शुद्ध मालवी में 'ण' नहीं बोला जाता है।
2. ड़ की अपेक्षा 'ड' अधिक प्रचलित है। यथा—पहाड, घडा इत्यादि।
3. मालवी में ऐ, औ की अपेक्षा ए, ओ बोलने की प्रवृत्ति मिलती है।
4. संज्ञा बहुवचन में हिंदी के 'लोग' की तरह होर/होरो/होनों जुड़ता है। जैसे—बयरा-हर (स्त्रियाँ), जजमान-हर (जजमान लोग) इत्यादि।
5. कर्म परसर्ग-के/खे/रे का प्रयोग इसकी एक अन्य विशेषता है।
6. करण अपादान-से/ती/मारे
7. संप्रदान-दे/के/ कारणे, वास्ते, सारू
8. संबंध-को, का, की, रो, रा, री के अतिरिक्त थाको, थाका, थाकी इत्यादि दक्षिणी राजस्थानी की अन्य मुख्य विशेषताएँ हैं।

नमूना—कोई आदमी के दो छोरा था। ˙ ˙ तब ओको बड़ो छोरो खेत में थो। ˙ ˙ हूँ उठि ने बाप के बाँ जाऊँ और ओको कूंगा।[74]

4. उत्तरी राजस्थानी (मेवाती)—'मेवाती' राजस्थानी बोलियों में चतुर्थ बोली है। यह शौरसेनी के नागर अपभ्रंश से विकसित है।

क्षेत्र—अलवर, गुडगांव, भरतपुर तथा आसपास इसका क्षेत्र है। 'मेव' जाति के नाम पर क्षेत्र का नाम 'मेवात' और बोली का 'मेवाती' पड़ा। 'मेवाती' की एक

Scanned by TapScanner

मिश्रित बोली 'अहीरवाटी' है, जो गुडगांव, दिल्ली तथा करनाल के पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाती है।

साहित्य—मेवाती में सिर्फ लोकसाहित्य मिलता है।

विशेषताएँ—

1. कर्त्ता, कर्म में 'नै' का प्रयोग मेवाती की मुख्य विशेषता है।
2. कर्म संप्रदान-कै
3. संबंध-को, का की
4. करण अपादान-सैं, तैं इत्यादि मेवाती की अन्य विशेषताएँ हैं।
5. मेवाती के सर्वनाम हरियाणवी के समान हैं। मेवाती में हम-तुम के विकल्प में 'हमा-तमा' प्रयुक्त होता है।
6. मेवाती में इसको, उसको आदि के अतिरिक्त ऐंको, वैंको, झैंको, कैंहको प्रयुक्त होते हैं।
7. मेवाती में भविष्यतकाल में केवल 'ग' रूप प्रचलित है। जैसे—चलूँगी, चलैगो इत्यादि।

नमूना—एक आदमी के दो बेटा हा। `` तब वैंह को बड़ो बेटो खेत में हो। मैं उठ के अपणा बाप के कने जाऊँ अर वैह ने कहूंगो।[75]

5. बिहारी हिंदी—बोलियाँ—

बिहारी हिन्दी के अन्तर्गत तीन बोलियाँ आती हैं—मगही, मैथिली और भोजपुरी।

1. मगही—'मगही' बिहारी-बोली—वर्ग की एक प्रमुख बोली है। इस बोली का विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है।

क्षेत्र—मगही भाषा का क्षेत्र पटना, बिहारशरीफ, गया, औरंगाबाद, हजारीबाग, पलामू, मुँगेर, भागलपुर, राँची इत्यादि हैं। पटना और गया कमिशनरियों के जिले मगही के मुख्य केंद्र हैं।

साहित्य—मगही में लोक-साहित्य पर्याप्त है। इसमें शिष्ट-साहित्य का अभाव है। मगही में मनभावन, सरस लोकगीतों (विशेषकर छठ मइया के गीत) की भरमार है। अब साहित्य भी रचा जाने लगा है। बिहार के+2 स्कूलों में भी मगही-साहित्य को जोड़ा गया है। बाबा मोहनदास, बाबा हेमनाथ, जयनाथपति मगही के मुख्य कवि हैं। श्यामसुन्दर दास के अनुसार मगही बोलने वालों की संख्या 66 लाख है।[76]

विशेषताएँ—

1. मगही में मूर्धन्य ध्वनि का दन्त्य ध्वनि के रूप में उच्चारण होता है।
2. हिंदी के 'हूँ' के स्थान पर मगही में 'ही' का प्रयोग होता है। जैसे—मैं सोता हूँ-हम सोइत ही। हम खाते हैं—हमनी खइत ही।
3. हिंदी के 'ल' का 'र' प्रयोग मगही में मिलता है। जैसे—गाली-गारी, केला-केरा, मेला-मेरा इत्यादि।

Scanned by TapScanner

4. मगही में कर्त्ताकारक में किसी परसर्ग का प्रयोग नहीं होता है। कपिल ने भात खाया–कपिल भात खलकई। पूनम ने कहा–पूनम कहलक।
5. मगही में सिर्फ 'के' संबंध विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—सुरेश के बेटा, नरेश के बेटी।
6. मगही में अतिरिक्त और अनावश्यक अनुनासिकता का व्यवहार होता है। गात-गाँत, काम-काँम, हाथ-हाँथ, तुमने-तूँ।
7. मगही में 'हथ' और 'हथू' क्रियाओं का अधिक प्रचलन है। जैसे—भइया जाइत हथू। दामाद जाइत हथ। (भईया जा रहे हैं, दामाद जा रहे हैं।)
8. मगही की क्रियाओं में लिंग-भेद नहीं मिलता। यथा—राम गाइत है। (राम गाता है।) सीता गाइत है। (सीता गाती है।)
9. मगही के संख्यावाचक विशेषणों में 'न' की प्रचुरता मिलती है। जैसे—पछन्तर (75), बहन्तर (72), चौहन्तर (74) इत्यादि।

नमूना—एक आदमी के दुगो बेटा हलथिन। ‥ अब ओकर बड़का बेटवा बाघ में हलै। ‥ हम उठ के अपने बाप हीं जाही अउ उनका से कहब।"

2. मैथिली—मैथिली 'बिहारी' बोलियों में एक मुख्य बोली है। 'मागधी' अपभ्रंश से मैथिली विकसित हुई है।

क्षेत्र—मैथिली 'मिथिला' की भाषा है। दरभंगा कमिश्नरी इसका मुख्य केन्द्र है। मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, वैशाली, मुजफ्फरपुर, कटिहार, खगड़िया, सहरसा, पूर्णिया, बाढ़ जिला मैथिली के मुख्य क्षेत्र हैं।

साहित्य—मगही और भोजपुरी से मैथिली-साहित्य काफी समृद्ध एवं सम्पन्न है। इसमें प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। विद्यापति, गोविंददास, रणजीत, उमापति, हर्षनाथ, हरिमोहन झा इत्यादि मैथिली के अच्छे साहित्यकार हैं। बिहार के स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त बिहार लोक सेवा आयोग, पटना के सिविल सर्विस परीक्षा में भी मैथिली ऐच्छिक पाठ्यक्रम के रूप में शामिल है।

विशेषताएँ—

1. मैथिली में ह्रस्व की प्रधानता है। यथा—बड़ (बड़ा), लोह (लोहा), चढ़ (चढ़ा), पढ़ (पढ़ा) इत्यादि।
2. मैथिली में मूर्द्धन्य 'ण' का दन्त्य 'न' के रूप में प्रयोग होता है। जैसे—बान (बाण), प्रान (प्राण), कोन (कोण) इत्यादि।
3. 'ल' के स्थान पर 'र' का प्रयोग मैथिली की मुख्य विशेषता है। जैसे—केरा (केला), फर (फल), हर (हल), गारि (गाली) इत्यादि।
4. 'का' के, की संबंध-विभक्तियों के बदले मैथिली में केवल 'क' संबंध-विभक्ति का प्रयोग होता है। उदाहरण-

Scanned by TapScanner

श्यामक बेटा-श्याम का बेटा। श्यामक बेटा सभ-श्याम के सभी बेटे।
श्यामक बेटी-श्याम की बेटी।

5. मैथिली में 'ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं होता है। यथा—नरेश पुस्तक पढ़लनि-
नरेश ने पुस्तक पढ़ी।

6. मैथिली में 'ड़' के स्थान पर 'र' का प्रयोग होता है। जैसे—घरा (घड़ा), घोरा-
(घोड़ा), सरक-(सड़क) इत्यादि।

7. मैथिली में 'ज' का 'च' प्रयोग किया जाता है। जैसे—मोचा (मोजा), तरबूच
(तरबूज), काच (काज), रोच (रोज) इत्यादि।

8. मैथिली में श, ष, स संयुक्त होने पर 'ह' का प्रयोग होता है। जैसे—मास्टर-
महटर, पुष्प-पुहप इत्यादि।

9. सम्प्रदान को, के लिए के स्थान पर कैँ, लेल मैथिली में प्रयुक्त होता है। जैसे—
इ केरा ओकरा लेल छैक-यह केला उसके लिए है।

10. अपादान 'से' के स्थान पर सँ, सञो का प्रयोग होता है। यथा—गाछ सँ फर
खसलई-पेड़ से फल गिरा।

11. सहायक क्रिया के रूप में मैथिली में छी, छै, अछि, छथि का प्रयोग होता है।
यथा—अहां के की हाल छै ? आपका क्या हाल-चाल है ?
नमूना-कोनो मनुख्य के दुई बेटा रहैन्हि। तखन ओकर जेठ बेटा खेत मे छलैक।
... हम उठि क अपना बाप क लग जाइ छी अउर हुन सँ कहबैन्हि...।[78]

3. भोजपुरी—बिहारी-बोलियों में भोजपुरी सर्वप्रमुख बोली है। भोजपुरी बोली का विकास 'मागधी अपभ्रंश' से हुआ है।

क्षेत्र—बिहार के शाहाबाद जिले के भोजपुर गाँव के नाम पर इस बोली का नाम 'भोजपुरी' पड़ा। भारत में भोजपुरी के क्षेत्र आरा, छपरा, बलिया, गोरखपुर, देवरिया, बनारस, जौनपुर, मिर्जापुर, पूर्णिया, आजमगढ़, गाजीपुर इत्यादि हैं। विदेशों में मॉरिशस, वेस्टइंडीज, सूरिनाम और फिजी में भी भोजपुरी का प्रचार-प्रसार है।

साहित्य—भोजपुरी में लोक-साहित्य पर्याप्त है। इसमें शिष्ट-साहित्य अत्यल्प है। साहित्यिक भाषा के रूप में भोजपुरी का उतना प्रचलन नहीं, जितना बोली के रूप में है। भाषा के अर्थ में 1789 ई. में भोजपुरी शब्द का प्रयोग मिलता है।[79] कबीर, धर्मदास, भीखासाहब की रचनाओं में भोजपुरी का प्रयोग मिलता है। **श्यामसुंदर दास** के अनुसार—"भोजपुरी बोलने वालों की संख्या 2 करोड़ 75 लाख है।"[80]

विशेषताएँ—

1. दीर्घीकरण की प्रवृत्ति भोजपुरी की मुख्य विशेषता है। जैसे—लड़िकवा गिलसबा, बेटवा इत्यादि।
2. संगीतात्मकता की प्रवृत्ति इसकी अन्य मुख्य प्रवृत्ति है।

Scanned by TapScanner

3. भोजपुरी में 'न' का 'ल' प्रयोग होता है। जैसे—नोट-लोट आदि।
4. 'ल' का प्राय: 'र' प्रयोग भोजपुरी में होता है। जैसे—हल-हर, फल-फर आदि।
5. भोजपुरी में 'न्द' का 'न', 'न्न' प्रयोग मिलता है। जैसे—बूंद-बून आदि।
6. भोजपुरी में 'म्ह' का 'म' प्रयोग होता है। जैसे—ब्रह्म-बरम।
7. कर्त्ताकारक में कोई परसर्ग भोजपुरी में नहीं होता है। यथा—सीता ने भात पकाया-सीता भात पकइलन।
8. संबंध-विभक्ति में केवल 'के' का प्रयोग भोजपुरी में होता है। यथा—सीता के बेटा, मीना के बेटी।
9. भोजपुरी में ऐसे विशेषण हैं, जो हिंदी से नहीं मिलते हैं। यथा—छोटहन, बड़हन, लमहर (छोटा, बड़ा, लम्बा) इत्यादि।
10. भोजपुरी में अनेक स्वतंत्र क्रियाएँ प्रचलित हैं। यथा—हवीं, हईं इत्यादि।
11. भोजपुरी के सर्वनाम अत्यन्त विशिष्ट हैं। यथा—हमर, हमनी, हम्मन, हमलोगन इत्यादि।

नमूना—एक आदमी ये दू बेटा रहे। ˙ ˙ तब ओकर बड़का भाई खेत मे रहे। ˙ ˙ हम उठि के अपना बाप किहा जाईला आ कहब ˙ ˙।[81]